Roll No. : ..... Total Pages : 4

5601

M.A. (Final) Examination, 2016

RAJASTHANI

Paper – I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

खण्ड-अ [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-ब [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-स [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

(इकाई–I)

(i) ढोला का दूसरा विवाह मालवा की किस राजकुमारी से हुआ ?

(ii) ढोला के महल के नीचे डेरा डाल कर रात भर माँड राग में मारवणी का प्रेम संदेश गाने वाले कौन थे ?

(इकाई–II)

(iii) 'रणमल्ल छंद' का रचयिता कौन है?

(iv) काव्य स्वरूप की दृष्टि से 'रणमल्ल छंद' किस कोटि का काव्य है?

(इकाई–III)

(v) 'वेलि क्रिसन रूक्मिणी री की कथा का मूल आधार किस ग्रंथ से ग्रहण किया गया है?

(vi) रूक्मिणी के पिता का नाम क्या है?

(इकाई–IV)

(vii) रूक्मिणी ने अपने पत्र में कृष्ण के पास क्या संदेश भेजा?

(viii) 'रणमल्ल छंद' किस भाषा की रचना है?

(इकाई–V)

(ix) 'वेलि' का आशय स्पष्ट कीजिये।

(x) पवाड़ा काव्य किस प्रकार की रचना है?

खण्ड-ब

(इकाई–I)

2. 'ढोला मारू रा दूहा' काव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिये।

3. 'ढोला मारू रा दूहा' में करहा (ऊँट) का वर्णन किस प्रकार से हुआ है?

(इकाई–II)

4. 'वेलि क्रिसन रूक्मिणी री' काव्य कृति के आधार पर रूक्मिणी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिये।

5. 'वेलि क्रिसन रूक्मिणी री' में वर्णित रस-व्यंजना पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

(इकाई–III)

6. रणमल्ल द्वारा लड़े गये मुख्य युद्ध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिये।

7. रणमल्ल का चरित्र चित्रण कीजिये।

(इकाई–IV)

8. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

राति ज रूँनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ।
हाथाळी छाला पड्या, चीर निचोइ निचोइ।।

अकथ कहाणी प्रेम की, किणसूँ कही न जाइ।
गूंगा का सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ।।

यहु तन जारी मसि करूँ, धूँआ जाहि सरग्गि।
मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि।।

9. कुमकुमइ मँजण करि, घउत वसत्र धरि,
चिहुरे जळ लागउ चुवण।
छीणे जाणि छछोहा छूटा,
गुण-मोती मरवतूल-गुण।।

लागी बिहुँ करे घूपणइ लीघइ,
केस-पास मुगता करण।
मन-म्रिग-चइ कारणइ मदन-ची,
वागुरि जाणे विसतरण।।

(इकाई–V)

10. 'रणमल्ल छंद' काव्य के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

11. राजस्थानी गीत साहित्य की विशेषताएं बताइये।

खण्ड-स

(इकाई–I)

12. 'मारवणी का प्रेम-संदेश राजस्थानी श्रृंगार साहित्य में सर्वोत्तम है।' उक्त को सोदाहरण समझाइये।

(इकाई–II)

13. 'ढोला मारू रा दूहा' के कला पक्ष की विवेचना कीजिये।

(इकाई–III)

14. खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'वेलि क्रिसन रूक्मिणी री' काव्य की समीक्षा कीजिये।

(इकाई–IV)

15. 'रणमल्ल छंद' काव्य की एतिहासिकता पर अपने मत को स्पष्ट कीजिये।

(इकाई–V)

16. निम्नलिखित पर टिप्पणियां लिखिये :

(अ) रासो।

(आ) सिलोका।